



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website

<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक
हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. M645 विषय शोत
नाव. गुणजिष्ठकमल MSS
लेखक/लिपीकार श्रीकेशचार्डरचित
पृष्ठ 3 काळ — पूर्ण/अपूर्ण

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ तुलजावकं प्रारभ्यते ॥ दुग्धेन्दुकंदो ज्वलत्सुंदरंगीमुक्ता
 फलहारविभूषितांगी ॥ शुभ्रांबरारंभाभरा लसांगी वंदेहमाद्यां तुलजां भवा
 नीं ॥ १ ॥ कालाकर्मासामतिचारुहारो माणिक्यमुक्ताफलहारकंठी ॥ रक्ताव
 रारक्तविशाखनेत्री वंदेहमाद्यां तुलजां ॥ २ ॥ श्यामांगवर्णमृगशावनेत्रां
 कोशायवस्त्रांकुसुमेषुपूज्यां ॥ कञ्चूरिकाचंदनचर्चितांगी वंदेहमा
 ॥ ३ ॥ पीतांबरान्वपककांतिगौरीमल्लहतामुत्तममंडनेश्वरी ॥ नाशा
 यभूतांशुविहगनां वंदेहमाद्यां ॥ ४ ॥ चंद्रार्कताटकधरां त्रिनेत्रां शृ
 त्वां दधानामतिकालरूपां ॥ विपक्षमाशायधनायुधानां वंदेहमाद्यां ॥ ५ ॥

~~वृ~~ ब्रह्मेन्द्रनासयणरुद्रपूज्यादेवांगनाभिः परिगीयमानां॥ स्तु
 तावचोभिर्मुनिनारदाद्यैर्वंदितमाद्यां०॥६॥ अक्षंगयोगेसन
 कादिभिश्चध्यातामुनींद्रैश्चसमाधिगम्यां॥ भक्तस्पर्शितं भुवि
 कामधेनुं वंदेहयाद्यां०॥७॥ मित्रासनस्थं पारिवीज्यमानांदे
 वेः समस्तेश्चसुचामैस्त्व॥ छत्रं दधानामतिशुभ्रवर्णं वंदेह
 माद्यां०॥८॥ पूर्णः कटाक्षोऽखिललोकमातुर्गिरिंद्रकन्या
 भजतां सुधन्यां॥ दारिद्र्यकंठे व क राजनानां चिंताकुतः स्था

देवसागरस्य॥९॥ तुलजाष्टकमिदं स्तोत्रं त्रिकाक्षं पठेन्नरः॥
 आयुः कीर्तियशोऽक्षमीधनपुत्रानवाप्नुयात्॥ १०॥ इति
 श्रीमद्यंकराचार्यविरचितं तुलजादेवीस्तोत्रं संपूर्णं॥
 शुभं भवतु शके १७९० विभवा माहे माघ शुक्ल
 तीयायां भृगुवासरे श्रीमपिपीठिकाक्षेत्रे गोदायाम्पत
 ठस्थित श्रीसक्ताननसद्गुरुसमाधिसंनिधौ लिखितं॥

[OrderDescription]
,CREATED=09.09.19 14:56
,TRANSFERRED=2019/09/09 at 14:58:37
,PAGES=3
,TYPE=STD
,NAME=S0001700
,Book Name=M-645-TULJASHTKAM
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,